मुख्य परिभाषाएँ

- **गेट्स**→"अनुभव द्वारा व्यवहार में रुपान्तर लाना ही अधिगम है।"
- **ई.ए. पील**→"अधिगम व्यक्ति में एक परिवर्तन है, जो उसके वातावरण के परिवर्तनों के अनुसरण में होता है।"
- **नॉओम चॉमस्की**→ बच्चे भाषा सीखने की क्षमता के साथ पैदा होते हैं।
- **चॉमस्की**→भाषा सीखे जाने के क्रम में वैज्ञानिक पड़ताल भी साथ–साथ चलती रहती है।
- **औरोरिन**→ भाषा का अस्तित्व एवं विकास समाज के बाहर नहीं हो सकता।
- **वाइगोत्स्की**→ बच्चों के भाषायी विकास में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- **लेडी माण्टेसरी**→ लिखना, पढ़ने से पूर्व सीखना चाहिए।
- **गिलफोर्ड**→ सीखना व्यवहार के फलस्वरुप व्यवहार में परिवर्तन है।
- **ली मर्फी**→ सीखना व्यवहार और दृष्टिकोण दोनों का परिमार्जन है।
- स्किनर→ सीखना व्यवहार के अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया है।
- वुडवर्थ→ सीखना एक प्रक्रिया है जो बाद वाली क्रिया पर तुलना में अधिक स्थायी प्रभाव डालती है।

हिंदी शिक्षण (Teaching Methodology)

- उत्तर भारत में प्रचलित सभी आर्य भाषाओं की मूल भाषा वैदिक संस्कृत मानी जाती है।
- **प्रादेशिक भाषा (Regional Langauge) →** किसी प्रदेश–विशेष में प्रयुक्त होने वाली भाषा को प्रादेशिक भाषा का दर्जा दिया जाता है। जैसे –कश्मीरी, पंजाबी।
- **राजभाषा →** किसी प्रांत में सरकारी काजकाज चलाने के लिए वैधानिक रुप से जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है उसे राजभाषा कहते हैं।
- **आदर्श या परिनिष्ठित भाषा (Standard Langauge) →** अपनी लोकप्रियता और बहुप्रचलितता के फलस्वरुप जब कोई एक बोली आदर्श मान ली जाती है। उदाहरण के लिए 'खड़ी बोली' को आदर्श मानकर आज हिंदी भाषा क्षेत्र में प्रयोग में लाया जाता है।
- **राष्ट्रकवि दिनकर**–"हिंदी तोड़नेवाली नहीं, जोड़नेवाली भाषा .... एक धागे में बांधे हुए है।"
- **मातृभाषा के रुप में हिंदी शिक्षण के उद्देश्य →** ग्राह्यात्मक(L, R), अभिव्यंजनात्मक(S, W), रचनात्मक, श्लाघात्मक (श्लाघा means सराहना करना), अभिवृत्यात्मक उद्देश्य (Means) बच्चों में उपयुक्त दृष्टिकोणों, आदतों एवं अभिवृत्तियों का निर्माण करना।
- शैक्षिक उद्देश्यों का सीधा संबंध बच्चों के व्यवहार के ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक तीनों पक्षों से है।
- B.S. Bloom ने शैक्षिक उद्देश्यों को टेक्सोनामी (Taxonomy) द्वारा सहज बना दिया। Taxonomy का अर्थ वर्गीकरण करने की एक प्रणाली है।
- **व्यवहार के 3 पक्ष :-**

  (1) ज्ञानात्मक (Cognitive – Knowing)

  (2) भावात्मक (Affective – Feeling)

  (3) क्रियात्मक (Psychomotor – Doing)
- ब्लूम ने ज्ञानात्मक पक्ष के उद्देश्यों को सरल से कठिन को ध्यान में रखते हुए 6 वर्गों में बांटा –ज्ञान, बेध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन।
- मिलर उपागम (Psychomotor) → क्रियात्मक पक्ष पर जोर

वाचन/पठन
- सस्वर वाचन(क) व्यक्तिगत
- मौन वाचन(ख) सामूहिक/समवेत वाचन

- स्ट्रेंग का कहना है कि "पढ़ते समय व्यक्ति की अनुभूतियाँ जाग्रत होती हैं।"
- पठन कौशल विधि (ध्वनि–साम्य विधि) (Phonetic Method)→इसमें समान ध्वनि के वर्णो को एक साथ सिखाया जाता है जैसे – काम–दाम–राम–शाम।

लेखन कौशल विधि

(1) **संश्लेषणात्मक विधि/रेखा विधि**→इसमें बच्चे को रेखाएँ खींचने का अभ्यास कराते हैं जैसे – खड़ी रेखा, पड़ी रेखा, तिरछी रेखा, पूर्ण वृत्त, अर्द्ध वृत्त।

Ex :-न लिखना हो तो पहले एक खड़ी रेखा (|) फिर बीच में पड़ी रेखा(—) और पड़ी रेखा के सिरे पर गोलाई न।

(2) **पेस्टालॉजी की रचनात्मक प्रणाली**= इस विधि में अक्षरों को टुकड़ों में तोड़ लिया जाता है और एक–एक टुकड़े की आकृति बनाने का अभ्यास कराया जाता है।

(3) **मांटेसरी विधि →** मांटेसरी 3 वर्ष की आयु के पश्चात् बच्चे को वर्ण रचना सिखाने का समर्थन करती है इसमें बच्चे को लकड़ी या गत्ते के बने अक्षर पर उँगली फेरने को कहा जाता है फिर उनके बीच पेंसिल चलाने को कहा जाता है जब उनकी उँगली सध जाती है तब स्वतंत्र रुप से वर्ण लिखने को कहा जाता है।

EduBull.com

→प्रवर्तक→ मारिया मॉण्टेसरी (इटली के हैं)

→दूसरा नाम → मान्टेसरी विधि/साहचर्य विधि

→ आधारित → खेल विधि (प्रवर्तक–कुक)

→ मांटेसरी विधि किस सिद्धांत पर कार्य करती है – रुसो (प्रकृतिवादी सिद्धांत)

→ यह लेखन अनुकरण विधि का एक भाग है।

→ LSRW Sequence है But मान्टेसरी के अनुसार लिखना पहले पढ़ना बाद में Means सबलप But औरों के अनुसार सबपल है।

इस विधि में अध्यापन कार्य → बालश्रावण/लहर कक्षा–कक्ष होनी चाहिए means दीवारों पर चित्र/चार्ट/वर्ण/शब्द/वस्तु/खिलौने

विशेषता :–

मनोवैज्ञानिक, क्रियात्मक विधि, बालकेन्द्रित, प्रजातांत्रिक विधि

प्रयत्नलाघव = कम प्रयास से अपना काम निकालना मानव की प्रकृति होती है इसे ही प्रयत्नलाघव कहते हैं। इस प्रयत्नलाघव के कारण ही स्वर लोप एवं वर्ण लोप जैसी उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ होती रहती हैं। स्टेशन को टेशन बोलना या मैडम को मैम कहना।

चंपूकात्य→ जहाँ गद्य एवं पद्य दोनों का मिश्रित प्रयोग हो।

आचार्य विश्वनाथ–वाक्यं रसात्मकं काव्यम् Means रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

आचार्य आनंदवर्धन→काव्यस्य आत्मा ध्वनि : काव्य की आत्मा ध्वनि है।

पं. जगन्नाथ→रमणीयार्थप्रतिपादक : शब्द काव्यम् अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।

आचार्य कुंतल→वक्रोक्ति काव्यस्य जीवितम्, वक्र उक्ति काव्य का जीवन है।

श्यामसुंदर दास→ कलात्मक रीति से सजी हुई भाषा, जिसमें भावों की व्यंजना हो, कविता कहलाती है।

रामचंद्र शुक्ल→ ह्रदय की मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।

वड्सवर्थ→ शांति के समय स्मरण किए गए प्रबल मनोवेगों का स्वच्छद प्रवाह कविता है।

मैथ्यू ऑर्नल्ड→ कविता मूल रुप में जीवन की आलोचना है।

प्रश्नोत्तर विधि/विश्लेषण विधि

कहानी/प्रेमचंद ने गल्प/आख्यायिका श्यामसुंदरदास ने

पतंजलि ने अपने महाकाव्य में व्याकरण को 'शब्दानुशासन' कहा है।

निगमन प्रणाली→ अज्ञात से ज्ञात की ओर

नियम से उदाहरण की ओर

भाषा संसर्ग प्रणाली (Language Contact Method)→ प्राथमिक स्तर पर बच्चों को व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान देने के लिए यह विधि उपयोगी है परंतु व्याकरण का तार्किक ज्ञान कराने के लिए अन्य विधियों की सहायता लेनी होगी।

रचना शिक्षण प्रणाली

(1) **उद्बोधक प्रणाली**→इसमें प्रश्नोत्तर or दृश्य–श्रव्य साधन आदि का प्रयोग करके छात्रों की कल्पना एवं विचार शक्ति को प्रेरित कर संबंधित विषय की सामग्री को बच्चों से ही निकलवाया जाता है। कक्षा में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है कि छात्र स्वयं संबंधित विषय पर विचार प्रस्तुत करते हैं।

(2) **अनुकरण प्रणाली**→ यदि मैं शिक्षक होता रचना का अनुकरण कर छात्र 'यदि मैं परीक्षक होता' विषय पर रचना कार्य कर सकते हैं। इस विधि का प्रयोग माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर रचना कार्य कराने के लिए किया जाता है।

(3) **समवाय प्रणाली (Correl Method)**→इसमें भाषा साहित्य की विधाओं को पढ़ाते समय छात्रों को ऐसे प्रश्न दिए जाते हैं जिसका उत्तर छात्रों को एक रचना के रुप में देना पड़ता है। छात्र निबंधात्मक शैली में प्रश्न का उत्तर लिखते हैं or इस तरह उन्हें रचना करने का अवसर मिलता है। माध्यमिक एवं उच्च कक्षाओं

सूक्ष्म–शिक्षण

- **एलन(1966)**→सूक्ष्म शिक्षण से तात्पर्य शिक्षा क्रिया के उस सरलीकृत रुप से है जिसे थोड़े विद्यार्थियों वाली कक्षा के सामने अल्प समय में संपन्न किया जाता है।
- **L.C. Singh 1971**→ सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण का वह सरलीकृत लघु रुप है जिसमें किसी अध्यापक द्वारा किन्हीं 5 विद्यार्थियों के समूह को 5 से 20 मिनट तक की अल्प विधि में पाठ्यक्रम की एक छोटी इकाई का शिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रकार की परिस्थिति, किसी अनुभवी तथा अनुभवहीन अध्यापक को नवीन शिक्षण–कौशलों का अर्जन करने और पूर्व अर्जित कौशलों में सुधार लाने के लिए उपयोगी अवसर प्रदान करती है।

  यह अध्यापकों को शिक्षण कौशलों का अभ्यास कराने हेतु अपनायी गई एक प्रशिक्षण तकनीक (Training Technique) है अतः इसे किसी भी अवस्था में शिक्षण तकनीक (Teaching Technique) नहीं समझा जाना चाहिए।
- At last, सूक्ष्म शिक्षण से अभिप्राय एक ऐसी विशिष्ट प्रशिक्षण तकनीक से है जिसके द्वारा कक्षा–आकार, समय और विषय–सामग्री को अल्प मात्रा में सीमित कर अनुभवहीन अथवा अनुभवी अध्यापकों को कुछ विशिष्ट शिक्षण–कौशलों के अभ्यास का समुचित अवसर देकर उनकी शिक्षण–कला में निखार लाने का प्रयास किया जाता है।"
- सूक्ष्म पाठ की अवधि = 6 मिनट
- सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Micro-Teaching Cycle) = 36 m

(1) शिक्षण सत्र (Teaching Session) 6 m

(2) प्रतिपुष्टि सत्र (Feed-back Session) 6 m

(3) पुनर्योजना सत्र (Re-plan Session)	12 m
(4) पुनः शिक्षण सत्र (Reteach Session)	6 m
(5) पुनः प्रतिपुष्टि सत्र (Refeed-back Session)	6 m
	36 m

उद्दीपक परिवर्तन कौशल (Skill of Stimulus Variation)

एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों से कोई अपेक्षित अनुक्रिया (Response) को प्राप्त करने के लिए किसी विशेष उद्दीपक (stimulus) का प्रयोग करता है। प्रश्न पूछना, श्यामपट्ट की ओर इशारा करना, चित्र या वस्तु दिखाना आदि इसी प्रकार के उद्दीपक हैं जिनकी सहायता से वह विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर और विषयवस्तु की ओरआकर्षित तथा केंद्रित करने का प्रयास करता है।

- **वाक–संरुप परिवर्तन (Change in voice)**→ एक शिक्षक अपनी आवाज में चढ़ाव उतार लाने, उसकी गति को कम या अधिक करने और अपने बोलने या उच्चारण के ढंग में विशेष परिवर्तन लाने से संबंधित क्रियाएँ करता है।
- **अंतः क्रिया शैली परिवर्तन**→कक्षा में चल रही संप्रेक्षण प्रक्रिया अंतः क्रिया कहलाती है।
- **पाठ–योजना**→ अध्यापक अपने दैनिक शिक्षण कार्य को कुशलतापूर्वक संपन्न करने के लिए जो योजना बनाता है, उसे पाठ–योजना कहते हैं।
- डेविस महोदय ने पाठ–योजना के बारे में कहा है –"शिक्षक के लिए कोई अन्य वस्तु इतनी घातक नहीं है जितनी कि पाठ की तैयारी का कम होना।"

पाठ–योजना निर्माण संबंधी विभिन्न उपागम (Approaches) :-

(1) हरबर्ट का पंचपदीय उपागम → जर्मन शिक्षाशास्त्री हरबर्ट (इनके शिष्य जिलट ने बाद में 5 पद बनाए)
(2) ब्लूम का मूल्यांकन उपागम
(3) मॉरीसन का इकाई उपागम
(4) आर.सी.ई.एम. उपागम

हरबर्ट→(i) प्रस्तावना / तैयारी
(ii) विषय–प्रवेश / प्रस्तुतीकरण
(iii) तुलना
(iv)सामान्यीकरण / नियमीकरण
(v) प्रयोग

ब्लूम उपागम / मूल्यांकन उपागम → प्रोफेसर ब्लूम (अमरीका)

ब्लूम ने शिक्षण–लक्ष्यों को व्यवहार परिवर्तन के रुप में लिखने की बात कही जिससे अध्यापक के शिक्षण के प्रभाव का सही मापन या मूल्यांकन किया जा सके।

ब्लूम महोदय के अनुसार शिक्षण बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली त्रिपदी प्रक्रिया है।

शिक्षण लक्ष्य, अधिगम अनुभव, व्यवहार में परिवर्तन

ब्लूम ने बच्चों के व्यवहार को 3 भागों में विभाजित किया – ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक।

Curriculum यह लेटिन भाषा केCurrer शब्द से बना है जिसका अर्थ है – 'दौड़ का पथ।'

कनिंहाम ने पाठ्यक्रम को परिभाषित –"पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथों में एक औजार (साधन) है जिससे वह अपनी वस्तु (छात्र) को अपने कलाकक्ष (विद्यालय) में अपने आदर्शो (शैक्षिक लक्ष्य) के अनुसार ढ़ालता है।"

- **समवाय सिद्धांत (Correlation)**→ Means सभी विषयों का आपस में सह–संबंध होता है।

पाठ्यपुस्तकें – एकांत के क्षणों की प्रिय मित्र

- छोटी कक्षाओं में संवादात्मक व कथात्मक शैली अधिक रुचिकर और बड़ी कक्षाओं में वर्णनात्मक या भावप्रधान शैली।
- छोटी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तक का आकार बड़ा और उच्चतर की पाठ्यपुस्तक का आकार छोटा 6" × 4" का होना चाहिए।
- किसी भी स्तर पर 12 पाइंट से कम का आकार नहीं होना चाहिए। पाठ के शीर्षक 16 पाइंट के आकार के होने चाहिए। छोटी कक्षाओं में 24 और 32 पाइंट के आकार का टाइप भी हो सकता है।
- डा. विजयेंद्र स्नातक का = अनुज के नाम पत्र
- महात्मा गांधी का संस्मरण= हाई स्कूल में
- इंद्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित झांसी की रानी लक्ष्मीबाई (जीवनी)

EduBull.com

शिक्षण उद्देश्य (Educational Objectives)

मूल्याकंन

अधिगम अनुभव (Learning experiences) ⟷ व्यवहार परिवर्तन(Behavioural changes)

- समरुप या युगलीकरण परीक्षा (Matching Test)
- पर्यवेक्षण (Observation)
- संचित अभिलेख पत्र = छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों में आए व्यवहार परिवर्तनों एवं उपलब्धियों को एक ही प्रपत्र में लिखकर सुरक्षित रखा जाता है, इसी को संचित अभिलेख पत्र कहा जाता है। इसकी सहायता से छात्रों के क्रमिक विकास एवं व्यवहार–परिवर्तनों की जांच की जाती है। इसमें छात्र के विद्यालय प्रवेश से लेकर छोड़ने तक की छात्र की हर उपलब्धि का लेखा–जोखा (रिकॉर्ड) रखा जाता है।
- निर्धारण मापनी (रेटिंग स्केल)
- हिंदी साहित्य के 2 अंग हैं

  पद्य, गद्य > यह हमारे दैनिक जीवन की भाषा है।
- **एकांकी→** यह नाटक का ही एक रुप है इसमें जीवन की किसी घटना को एक अंक में प्रस्तुत किया जाता है। रंगमंच पर दृश्य–परिवर्तन नहीं करना पड़ता है। कम समय में अधिक आनंद प्रदान करना एकांकी की प्रमुख विशेषता है।
- **उपन्यास→**2 types –घटना प्रधान व चरित्र प्रधान। जासूसी तथा साहसिक कथानक वाले घटना प्रधान उपन्यास होते हैं तथा ऐतिहासिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक कथानक वाले उपन्यास चरित्र–प्रधान होते हैं।
- **जीवनी→** इसमें किसी व्यक्ति के जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इसमें किसी काल्पनिक घटना का वर्णन नहीं होता।
- **आत्मकथा→** इसमें कोई व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं को स्वयं लिखकर प्रस्तुत करता है। आत्मकथाः स्वतः लिखी जाती है।
- **संस्मरण→**इसमें लेखक स्वयं अपनी आंखों देखी या अनुभव की गई घटनाओं का रोचक विवरण प्रस्तुत करता है।
- **रेखाचित्र→** इसे शब्दचित्र/स्कैच भी कहते हैं। इसमें किसी व्यक्ति की आकृति, चाल–ढाल या स्वभाव की किन्हीं विशेषताओं को शब्दचित्रों के माध्यम से सजीव रुप में चित्रित किया जाता है।
- **रिपोर्ताज→** किसी भी घटना की कलात्मक व साहित्यिक अभिव्यक्ति अर्थात् रिपोर्ट ही रिपोर्ताज है। ये घटनाएँ वास्तविक होती है केवल कल्पना की सहायता से उन्हें रोचक बनाया जाता है।
- **अनुदेशनात्मक सामग्री→** ऐसे सभी सामग्री, उपकरण तथा स्त्रोत जो एक कक्षा अध्यापक को उत्तम संप्रेषण प्रक्रिया, स्वस्थ कक्षा–कक्ष अंतः क्रिया तथा अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में आवश्यक सहयोग प्रदान करते हैं उन्हें शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में अनुदेशनात्मक सामग्री या साधन कहकर पुकारा जाता है।
- प्रतिरुप (मॉडल), पाठ (प्रकरण)

EduBull.com